

[2023] 1 एस. सी. आर. 1169 ए

/

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम पूर्व-कर्मचारी संघ और ओ. आर. एस.

बनाम

महाराष्ट्र राज्य और ओ. आर. एस. (2023 की सिविल अपील संख्या 778) फरवरी 02, 2023

/

[अनिरुद्ध बोस और एस. रवींद्र भाट, जे. जे.]

सेवा कानून-वेतन संशोधन-महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम के कर्मचारियों के लिए पांचवें वेतन आयोग का आवेदन पूर्वव्यापी कट-ऑफ तिथि से प्रभावी है, लेकिन कार्यान्वयन की तारीख तक केवल सेवा में मौजूद कर्मचारियों तक सीमित है-पूर्व कर्मचारी (सेवानिवृत्त, उन लोगों के कानूनी प्रतिनिधियों सहित जो समाप्त हो गए थे, और जिन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना का लाभ उठाया था) जो पूर्वव्यापी कट-ऑफ तिथि पर सेवा में थे, लेकिन कार्यान्वयन की तारीख पर नहीं, भेदभाव की शिकायत करते हुए रिट याचिका दायर की-आयोजित:कट-ऑफ तिथि से वेतन संशोधन देने के निर्णय को गलत नहीं ठहराया जा सकता है, लेकिन उन लोगों को कोई संशोधन नहीं देना जो वेतन संशोधन को लागू करने के आदेश को जारी करने के समय सेवा में नहीं थे और इसे केवल मौजूदा कर्मचारियों तक सीमित करना स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण है-केवल मौजूदा कर्मचारियों के लिए वेतन संशोधन को सीमित करने का वेतन संशोधन के उद्देश्य से कोई तर्कसंगत संबंध नहीं है जो जीवन यापन की लागत में वृद्धि को कम करने के लिए है-उसी वर्ग में आगे का वर्गीकरण अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है-जो लोग सेवानिवृत्ति प्राप्त करने पर सेवानिवृत्त हुए या जो सेवा में रहते हुए मर गए वे राहत के हकदार हैं-वीआरएस कर्मचारी और वे जो सेवा से बर्खास्त/समाप्त हुए हैं जो उसी आधार पर नहीं हैं-भारत का संविधान-अनुच्छेद 14।

/

/

/

/

भारत का संविधान-शक्तियों का विभाजन-वेतन के निर्धारण, संशोधन की सीमा, कार्यान्वयन की तारीख के बारे में नीति-विशेष रूप से कार्यकारी निर्णय लेने की शक्तियों के भीतर-हालांकि, अदालतों का अधिकार क्षेत्र व्यापक सार्वजनिक हित के प्रश्नों में उत्पन्न होता है-कार्यान्वयन के तरीके, योजना की प्रयोज्यता के समय, प्रभाव, और विशेष रूप से जहां इसके परिणामस्वरूप

सार्वजनिक कर्मचारियों के कुछ वर्गों को लाभ से बाहर रखा जाता है या भेदभाव किया जाता है-
अनुच्छेद 14।

/

/

1169

1170 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

भारत का संविधान-वेतन संशोधनों का तर्क-बड़ा लोक हित शामिल-राज्य और सार्वजनिक नियोक्ता जो समय-समय पर जीवन यापन की लागत में वृद्धि के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए बाध्य हैं-अन्य उद्देश्यों में सार्वजनिक रोजगार के प्रति प्रतिबद्धता और निष्ठा को प्रोत्साहित करना, लोक सेवकों को संतुष्टि के लालच से रोकना शामिल है-अनुच्छेद 43।

/

आंशिक रूप से अपील को स्वीकार करते हुए, न्यायालय ने

अभिनिर्धारित किया :**1.1** अपने कर्मचारियों के वेतन के लिए वेतन के निर्धारण से संबंधित नीति तैयार करना, इसके संशोधन की सीमा और यहां तक कि इसके कार्यान्वयन की तारीख, निस्संदेह विशेष रूप से कार्यकारी निर्णय लेने की शक्तियों के भीतर है। हालांकि, इसके कार्यान्वयन का तरीका, किसी योजना के लागू होने का समय और इसका प्रभाव, विशेष रूप से जहां इसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक कर्मचारियों के एक निश्चित वर्ग को लाभ से बाहर रखा जाता है, न्यायालय द्वारा जांच के विषय हैं। विशेष रूप से, जब शिकायत भेदभाव और संविधान के अनुच्छेद **14** के उल्लंघन की हो, जैसा कि वर्तमान मामला है। [पैरा **11** [**1175-बी-सी**]]

/

/

1.2 महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम-एम. एस. एफ. सी. ने अपने कर्मचारियों के लिए पांचवें वेतन आयोग (जिसे राज्य सरकार द्वारा **01.01.1996** से प्रभावी किया गया था) को अपनाने के लिए अंतिम रूप नहीं दिया और राज्य वित्तीय निगम अधिनियम, **1951** की धारा **39** के अनुसार राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजा। उन सभी मौजूदा कर्मचारियों को वेतन संशोधन की अंतरिम राहत का लाभ दिया गया था जो **01.01.1996** और **29.03.2010** के बीच **MSFC** की वेतन सूची पर थे। केवल **29.03.2010** पर, राज्य सरकार से प्राप्त संचार के आधार पर, **MSFC** ने केवल मौजूदा कर्मचारियों के संबंध में प्रभावी

वेतन संशोधन सिफारिशों को लागू किया और **01.01.2006** से देय बकाया को सीमित कर दिया। कट-ऑफ तिथि का कारण (राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित)

/

/

वर्तमान कर्मचारियों को अधिकतम वसूली के लिए प्रेरित करने के लिए

/

एन. पी. ए. खातों में राशि। वेतन संशोधन के लाभ से इनकार करने का दूसरा औचित्य यह था कि कट-ऑफ तिथि का निर्धारण राज्य नीति के दायरे में आता है, जिसमें अन्य बातों के अलावा राज्य की वित्तीय चिंताएं शामिल हैं, जिनमें अदालतों को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

[पैरा 21-23,26] [1181-F-G; 1182-A-C; 1186-D] A

/

1171

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य ए

1.3 एक व्यापक जनहित शामिल है, जो सार्वजनिक अधिकारियों और कर्मचारियों के वेतन में संशोधन को प्रेरित करता है। आवधिक वेतन संशोधन के लिए तर्क यह सुनिश्चित करना है कि सार्वजनिक कर्मचारियों को मिलने वाले वेतन और परिलब्धियां जीवन यापन की बढ़ती लागत और सामान्य मुद्रास्फीति के रुझानों के साथ तालमेल बनाए रखें और यह सुनिश्चित करें कि इससे कर्मचारियों पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। वेतन संशोधन अन्य उद्देश्यों को भी कम करते हैं, जैसे कि सार्वजनिक रोजगार के प्रति प्रतिबद्धता और निष्ठा की एक नई भावना को प्रोत्साहित करना। एक अन्य महत्वपूर्ण जनहित विचार यह है कि इस तरह के संशोधन लोक सेवकों को संतुष्टि के प्रलोभन से रोकने के लिए हैं; अपने कार्यों के निर्वहन के लिए धन या अन्य प्रलोभन स्वीकार करके अपनी आय को बढ़ाने के लिए। संविधान का अनुच्छेद **43** राज्य को यह सुनिश्चित करने के लिए बाध्य करता है कि सभी श्रमिकों को जीवन निर्वाह मजदूरी प्रदान की जाए और एक सभ्य जीवन स्तर सुनिश्चित किया जाए। इस न्यायालय के पिछले फैसलों में महंगाई भत्ते (जो "स्लाइडिंग स्केल" पर होना है) के माध्यम से मूल्य वृद्धि को बेअसर करने के लिए एक तंत्र प्रदान करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। जनहित के एक उपाय के रूप में, राज्य और सार्वजनिक नियोक्ताओं का दायित्व है कि वे समय-समय पर मूल्य वृद्धि के कारण जीवन यापन की लागत में वृद्धि के दुष्प्रभावों को दूर करें, जिसके परिणामस्वरूप वास्तविक मजदूरी में गिरावट आती है। हालांकि, वेतन संशोधन कब और किस हद तक किया जाना चाहिए, इसके बारे में कोई स्ट्रैटजिकेट फॉर्मूला नहीं है। **[पैरा 27-29] [1186-E-H; 1187-A-B; 1188-C-D]**

/

/

/

/

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड बनाम.बी. एन. डोंगरे [1994] 2 पूरक।

एससीआर 217:(1994) 6 एस. सी. सी. 157-पर निर्भर था।

/

1.4 जबकि लाभों के अनुदान के लिए कट-ऑफ तिथि के निर्धारण पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है, न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में क्या है, इस तरह के निर्धारण के प्रभाव की जांच करना है और क्या इसके परिणामस्वरूप भेदभाव होता है।राज्य और एम. एस. एफ. सी. ने वेतन आयोग की सिफारिश को लागू करने की तारीख **(01.01.1996)** से लागू नहीं करने का फैसला किया, लेकिन एक दशक बाद **(01.01.2006)** से प्रभावी हो गया, क्योंकि एम. एस. एफ. सी. की सूची पर कर्मचारियों को (या बकाया) दिया जाने वाला लाभ **29.03.2010** पर देय बकाया तक सीमित था।उसी समय, फिटिंग और फिक्सेशन

/

वेतन की राशि **01.01.1996** से प्रभावी थी।फिटमेंट सूत्र ने नए तराजू में निर्धारण की कल्पना की, भले ही काल्पनिक रूप से,

/

1172 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

01.01.1996.बकाया राशि का भुगतान उस फिटमेंट और निर्धारण के आधार पर किया गया था, जो **01.01.2006** से प्रभावी था।एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अंतरिम राहत का निर्देश दिया गया था और सभी कर्मचारियों को **01.01.1996** और **29.03.2010** के बीच देय किया गया था, और इसे वसूल नहीं किया जाना था।यह दर्शाता है कि जो लोग इन तिथियों के बीच सेवानिवृत्त हुए, और जो सेवा में बने रहे, वे एक ही वर्ग का हिस्सा हैं।इसके अलावा, उन लोगों के बीच भी कोई अंतर नहीं है जो **01.01.2006** पर सेवा में हैं, लेकिन **29.03.2010** से पहले सेवानिवृत्त हुए हैं, और जो उसके बाद भी जारी रहे।[पैरा **30-31**] [**1188-E, H; 1189-A-B**]

/

/

1.5 प्रश्न यह है कि क्या वर्गीकरण, **29.03.2010** से पहले सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को छोड़कर और वेतन संशोधन लाभों को सीमित करने (हालांकि **01.01.2006** से प्रभावी) के परिणामस्वरूप भेदभाव होता है। इस न्यायालय ने अतीत में इस तरह के मामलों को खारिज कर दिया है: वन रक्षक का पद धारण करने वालों में से केवल स्नातकों को सीमित विभागीय परीक्षा के लिए पात्र बनाने की शर्त, एक वर्ग के भीतर एक वर्ग बनाने के बराबर है, जो अस्वीकार्य है।

/

(महाराष्ट्र वन रक्षक और वन रक्षक संघ बनाम राज्य

महाराष्ट्र); उन शिक्षकों को वेतन संशोधन से इनकार करना जो एक निर्दिष्ट अवधि के दौरान सेवानिवृत्त हुए थे (यानी, सेवानिवृत्ति की तारीख के आधार पर भेदभाव) मनमाना था, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप सरकारी कॉलेजों और गैर-सरकारी कॉलेजों में काम करने वाले शिक्षकों के बीच भेदभाव हुआ, जिसका अर्थ होगा समान व्यवहार करना।

/

असमान रूप से (यू. पी. राघवेंद्र आचार्य और अन्य बनाम कर्नाटक राज्य

&ओआरएस.); पेंशन के फार्मूले के कारण होने वाला वर्गीकरण जिसके तहत कट-ऑफ तिथि से पहले सेवानिवृत्त होने वालों को संशोधित पेंशन की कम दर दी गई थी, जो बाद में सेवानिवृत्त होने वालों की तुलना में कम थी।

/

भेदभावपूर्ण (ऑल मणिपुर पेंशनर्स एसोसिएशन अपने सचिव द्वारा)

v. मणिपुर राज्य और अन्य)। [पैरा **32-35**] [**1189-C-D; 1190-E-F; 1192-A-B**]

/

जम्मू-कश्मीर राज्य बनाम त्रिलोकी नाथ खोसा [**1974**] **1** एससीआर **771:(1974) 1** एस. सी. सी. **19**; महाराष्ट्र वन रक्षक और वन रक्षक संघ बनाम महाराष्ट्र राज्य [**2017**] **14** एस. सी. आर. **446:(2018) 1** एससीसी **149**; यू. पी. राघवेंद्र आचार्य और अन्य बनाम कर्नाटक राज्य और अन्य। [**2006**] **2** पूरक।

/

एससीआर **582:(2006) 9** एस. सी. सी. **630**; सभी मणिपुर पेंशनभोगी ए.

इसके सचिव बनाम मणिपुर राज्य और अन्य द्वारा संगठन।

[2019] 9 एससीआर 905:(2020) 14 एस. सी. सी. 625-पर निर्भर।

1.6 वर्तमान मामले में **29.03.2010** से पहले सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों ने वही कर्तव्यों का निर्वहन किया जो बाद में करने वालों के मामले में किया गया था। उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारियों की गुणवत्ता और सामग्री समान थी। **01.01.2006** से पहले बकाया नहीं देने के उत्तरदाताओं के निर्णय में गलती नहीं पाई जा सकती है; हालाँकि, उन लोगों को कोई संशोधन नहीं देना जो इसमें शामिल नहीं थे।

/

जब वेतन संशोधन को लागू करने का आदेश जारी किया गया था और इसे रोजगार में उन लोगों तक सीमित करना स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण है।

/

यह तर्क कि केवल मौजूदा कर्मचारियों को इस तरह का वेतन संशोधन देना उन्हें एमएसएफसी को देय एनपीए राशि की वसूली के लिए उत्साहित करने के लिए होगा, वेतन संशोधन द्वारा प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के साथ कोई तर्कसंगत संबंध नहीं है, जो कर्मचारियों को लाभान्वित करने और उन्हें जीवन यापन की लागत में वृद्धि से बचाने के लिए है। उन लोगों के बीच कोई अंतर नहीं है जो **29.03.2010** से पहले सेवानिवृत्त हुए (या सेवा में मर गए) और जो सेवा में बने रहे (और जिन्हें वेतन संशोधन दिया गया)। वे एक ही वर्ग में आते थे और आगे कोई अंतर नहीं किया जा सकता था। यह तथ्य कि एमएसएफसी ने **5** वें वेतन आयोग के लिए वितरित किसी भी अंतरिम राहत या राशि की वसूली नहीं की, इस बात की पुष्टि करता है कि ये पूर्व कर्मचारी एक ही वर्ग के थे। सेवानिवृत्त कर्मचारियों का बहिष्कार, जो अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख प्राप्त करने पर **01.01.2006** और **29.03.2010** के बीच सेवानिवृत्त हुए, भारत के संविधान के अनुच्छेद **14** का उल्लंघन है। [पैरा **36-37**] [**1194-E-H; 1195-A-B**]

/

/

/

1.7 हालांकि, जिन कर्मचारियों ने वी. आर. एस. लाभ प्राप्त किए और इस अवधि के दौरान स्वेच्छा से एम. एस. एफ. सी. की सेवा छोड़ दी, वे अलग स्थिति में हैं। वे उन लोगों के साथ समानता का दावा नहीं कर सकते हैं जिन्होंने लगातार काम किया, अपने कार्यों का निर्वहन किया और उसके बाद सेवानिवृत्त हुए। वी. आर. एस. कर्मचारियों ने निगम की सेवा को चुनने और छोड़ने का फैसला किया; उन्होंने पाया कि वी. आर. एस. प्रस्ताव उनके लिए फायदेमंद

है।सामान्य अंतिम लाभों के अलावा, उनमें से प्रत्येक को अतिरिक्त राशि दी गई थी-एक अनुग्रह राशि थी, जो प्रत्येक पूर्ण वर्ष के लिए एक महीने के वेतन के बराबर थी।

/

/

1174 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

सेवा करते हैं।अन्य सेवानिवृत्त कर्मचारियों को कभी भी इतनी राशि नहीं दी गई।[पैरा **38**]
[1195-बी-डी]

ए. के. बिंदल बनाम भारत संघ **[2003] 3 एस. सी. आर. 928:(2003)**

5 एस. सी. सी. 563-पर निर्भर था।

/

1.8 जो लोग पूर्वव्यापी कट-ऑफ तिथि और कार्यान्वयन की तारीख के बीच एमएसएफसी की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए, और उन लोगों के कानूनी उत्तराधिकारी/प्रतिनिधि जिनकी उस अवधि के दौरान मृत्यु हो गई, वे वेतन संशोधन के आधार पर बकाया के हकदार होंगे।वी. आर. एस. कर्मचारी, और जिन्हें बर्खास्त या सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था, वे वेतन संशोधन के लाभ के लिए समानता का दावा नहीं कर सकते हैं।[पैरा **39,40**] **[1196-ई-एफ]** मामला विधि संदर्भ

/

पैरा **28**

[1994] 2 सप.एस. सी. आर. 217 ने **[1974] 1 एस. सी. आर. 771** पर भरोसा किया

पैरा **32**

/

[2017] 14 एससीआर 446

पर विश्वास किया

पैरा **33**

[2006] 2 पूरक।एस. सी. आर. 582 पर निर्भर

पैरा **34**

[2019] 9 एससीआर 905

पर विश्वास किया

पैरा **35**

/

[2003] 3 एससीआर 928

पर विश्वास किया

पैरा **38,39**

सिविल अपीलीय अधिकारिता सिविल अपील No.778

2023.

2013 के डब्ल्यू. पी. No.1420 में नागपुर में बॉम्बे उच्च न्यायालय के न्यायिक निर्णय और आदेश दिनांक 19.06.2018 से।

/

जय सावला, वरिष्ठ अधिवक्ता, सत्य प्रिया राव, नितिन S.Tambwekar, शेषतल्पा साई बंडारू, जसदीप सिंह ढिल्लन, अधिवक्ता।अपीलार्थियों के लिए।संतोष पॉल, वरिष्ठ अधिवक्ता, मैत्रेय शेटी, वेदांत मिश्रा, अक्षय कुमार, एम. जे. पॉल, सचिन पाटिल, सिद्धार्थ धर्माधिकारी, आदित्य अनिरुद्ध पांडे, जियो जोसेफ, रिस्वी मुहम्मद, दुर्गेश गुप्ता, अधिवक्ता।उत्तरदाताओं के लिए।

/

/

1175

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v.महाराष्ट्र राज्य ए

/

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

एस. रवींद्र भाट, जे.

1. अपील करने के लिए विशेष अनुमति दी गई।पक्षकारसभक विद्वान वकीलक सहमतिसँ अंततः अपीलपर सुनवाई भेल।

2. इस मामले में जो बात शामिल है, वह है पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने के लिए तारीख का निर्धारण, जब प्रतिवादी निगम को लागू किया जाता है।अपने कर्मचारियों के वेतन के लिए वेतन के निर्धारण से संबंधित नीति तैयार करना, इसके संशोधन की सीमा और यहां तक कि

इसके कार्यान्वयन की तारीख, निस्संदेह अनन्य कार्यकारी निर्णय लेने की शक्तियों के मामले हैं। हालाँकि, इसके कार्यान्वयन का तरीका, किसी योजना के लागू होने का समय और इसका प्रभाव, विशेष रूप से जहां इसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक कर्मचारियों के एक निश्चित वर्ग को लाभ से बाहर रखा जाता है, न्यायालय द्वारा जांच के विषय हैं, विशेष रूप से जब शिकायत भेदभाव और संविधान के अनुच्छेद 14 के उल्लंघन की हो। यह एक ऐसा ही मामला है।

/

/

/

3. अपीलकर्ता संघ (जिन कर्मचारियों ने सेवानिवृत्त किया था, वी. आर. एस. का विकल्प चुना था, इस्तीफा दे दिया था, या प्रतिवादी निगम के सेवानिवृत्त कर्मचारियों के कानूनी उत्तराधिकारी) ने बॉम्बे उच्च न्यायालय (नागपुर पीठ) के निर्णय 1 को चुनौती दी थी। उस कार्यवाही में, अपीलकर्ताओं ने उद्योग, ऊर्जा और श्रम विभाग, महाराष्ट्र सरकार (इसके बाद "राज्य") के दिनांकित 29.03.2010 निर्णय के खिलाफ भेदभाव की शिकायत की थी। उस निर्णय ने महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम (इसके बाद "एमएसएफसी") के उन कर्मचारियों को, जो 01.01.2006 से 29.03.2010 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त हुए थे या जिनकी मृत्यु हो गई थी, पांचवें वेतन आयोग द्वारा अनुशंसित वेतनमान के संशोधन के लाभ से इनकार कर दिया। राज्य के उस निर्णय ने पांचवें वेतन आयोग की रिपोर्ट के परिणामस्वरूप वेतनमान में संशोधन किया जो एमएसएफसी के 115 कर्मचारियों पर लागू होता है जो 29.03.2010 पर काम कर रहे थे। हालाँकि, संशोधन को 01.01.2006 से प्रभावी कर दिया गया था। 4. अपीलकर्ताओं ने उच्च न्यायालय के समक्ष आग्रह किया था कि उन्हें वेतनमान के लाभ से वंचित करना भेदभावपूर्ण और मनमाना था, क्योंकि वे निरंतर सेवा में थे, और उन्हें वेतन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार वेतनमान को अंतिम रूप देने तक अंतरिम संशोधन का लाभ भी मिला था। यह आग्रह किया गया कि जो लोग 29.03.2010 पर और उसके बाद कार्यरत हैं, और जो 01.01.2006 के बाद भी सेवा में बने रहे लेकिन 29.03.2010 से पहले सेवानिवृत्त हुए हैं, वे उसी श्रेणी के हैं। एकमात्र

/

/

/

1 डब्ल्यू. पी. सं. में दिनांकित 19.06.2018 1420/2013

/

1176

/

[2023] 1 एस सी आर।

बाद की तारीख के बाद सेवा में रहने वालों के बीच अंतर यह था कि उनके पास सेवा की लंबी अवधि थी। हालाँकि, वेतन संशोधन के अनुदान के लिए महत्वपूर्ण तिथि, वह तिथि थी जिससे इसे प्रभावी किया गया था, अर्थात्, 01.01.2006। चूंकि सभी अपीलार्थी उस तारीख को सेवा में थे, इसलिए वेतन संशोधन से इनकार करना, जो कि उनके द्वारा काम की गई अवधि के लिए स्वीकार किया गया था, न केवल शत्रुतापूर्ण भेदभाव था, बल्कि वैध और सही तरीके से उनके वेतन संशोधन लाभों को भी रोकना था।

/

5. आक्षेपित आदेश द्वारा, उच्च न्यायालय ने एमएसएफसी और राज्य की दलीलों को स्वीकार कर लिया, कि मौद्रिक लाभों को देने या अस्वीकार करने के संबंध में वित्तीय विचार महत्वपूर्ण थे। एम. एस. एफ. सी. ने उच्च न्यायालय के समक्ष यह भी आग्रह किया था कि बेहतर प्रदर्शन के लिए उन्हें प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने के लिए निगम के रोल पर उन कर्मचारियों को 29.03.2010 के रूप में लाभ दिया गया था।

/

6. राज्य सरकार द्वारा दायर जवाबी शपथपत्र का हवाला देने के बाद, जिसने इस तरह के संशोधन को मंजूरी दी, उच्च न्यायालय ने एमएसएफसी के तर्क को स्वीकार कर लिया:

/

“...यह भी माना गया कि प्रतिवादी संख्या 2 निगम में केवल 115 कर्मचारी काम कर रहे थे और निकट भविष्य में उक्त कर्मचारियों की संख्या और कम हो जाएगी। एक करोड़ रुपये का खर्च। 16.00 लाख प्रति माह कर्मचारियों को देय वेतन पर खर्च किया जा रहा था। यह भी ध्यान दिया गया कि प्रत्यर्थी संख्या 2 ने वर्ष 2005 से ऋण स्वीकृत करना और वितरित करना बंद कर दिया है और वर्तमान में केवल पहले से दिए गए ऋणों की वसूली का काम किया जा रहा है। यह भी माना गया कि ऋण वसूली के काम को पूरा करने के लिए मौजूदा कर्मचारियों की संख्या आवश्यक है। वर्षों के लिए निर्धारित ऋण वसूली के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए, मौजूदा कर्मचारियों को वसूली लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए कर्मचारियों को वेतन संशोधन का लाभ देने के लिए प्रेरित करना आवश्यक महसूस किया गया। वित्तीय प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, कर्मचारियों की संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रतिवादी संख्या 2 के कर्मचारियों को 5 वां वेतन लागू करने का निर्णय लिया गया। तदनुसार, इसकी आय पर विचार करते हुए और सभी प्रासंगिक कारकों पर विचार करते हुए; यह निर्णय लिया गया कि 5 वें वेतन आयोग की सिफारिशों के आधार पर वेतन संशोधन केवल मौजूदा कर्मचारियों को दिया जाना चाहिए और संशोधित वेतनमान को 01.01.2006 से लागू किया जाना चाहिए। उपरोक्त तथ्य पर विचार करने के बाद, उत्तरदाता के वित्त विभाग ने संशोधन ए को मंजूरी देने का निर्णय लिया

/

/

/

/

1177

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

वित्त विभाग द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार, सरकारी जी. आर. No.SFC-2009 (422/उद्योग-7) दिनांक 29/03/2010 के माध्यम से प्रतिवादी संख्या 2 को वेतनमान और सूचित निर्णय। तदनुसार, सरकारी संकल्प दिनांक 20.03.2010 जारी किया गया था।

16. यह विशेष रूप से अस्वीकार किया जाता है कि सरकारी प्रस्ताव दिनांक 1 भेदभावपूर्ण प्रकृति का है और याचिकाकर्ता संघ के सदस्य के मौलिक अधिकारों को कम करता है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि उत्तरदाता ने पहले ही अपने कर्मचारियों को वेतन संशोधन देने के उद्देश्य से राज्य में किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र के निगम को कोई बजटीय सहायता नहीं देने का नीतिगत निर्णय ले लिया है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि प्रतिवादी संख्या 2 लाभ कमाने वाला निगम नहीं है, वेतन संशोधन के प्रश्न पर वित्तीय निहितार्थ और प्रतिवादी संख्या 2 की क्षमता को ध्यान में रखते हुए विचार किया गया, जिसने इस तरह के वेतन संशोधन के कारण अतिरिक्त वित्तीय बोझ को सहन करने के लिए विकास की भूमिका निभाई। साथ ही यह भी ध्यान दिया गया कि मौजूदा कर्मचारियों को वेतन संशोधन देना भी आवश्यक था ताकि वे पहले से वितरित ऋणों की वसूली के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित हो सकें। वेतन संशोधन को वित्तीय प्रभावों को ध्यान में रखते हुए 01.01.2006 से फिर से प्रभावी बनाया गया था। यह प्रस्तुत किया जाता है कि उत्तरदाता द्वारा लिया गया निर्णय वस्तुनिष्ठ और तर्कसंगत विचारों पर आधारित है। "

/

/

/

/

7. वेतनमान के संशोधन के मामले में प्रतिवादी-निगम के विद्वान वकील श्री पुराणिक द्वारा लिए गए निर्णयों में, सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट रूप से निर्धारित किया है कि कट-ऑफ तिथि निर्धारित करने के लिए वित्तीय निहितार्थ प्रासंगिक मानदंड है। याचिकाकर्ताओं के विद्वान वकील

श्री ढोले द्वारा जिन अन्य निर्णयों पर भरोसा किया गया है, वे पेंशन और अन्य लाभों के भुगतान के प्रश्न पर हैं।

/

8. प्रत्यर्थी सं. द्वारा दिए गए औचित्य को ध्यान में रखते हुए। 1 और 2, हम यह नहीं पाते हैं कि वर्तमान मामले में 29/3/2010 की कट ऑफ तिथि का निर्धारण मनमाना या तर्कहीन है। इसलिए, हमें याचिका में कोई सार नहीं मिलता है। "

/

अपीलार्थियों की दलीलें

7. अपीलार्थियों के वकील श्री जय साल्वा ने तर्क दिया कि अंतिम वेतन संशोधन एमएसएफसी के कर्मचारियों पर लागू किया गया था।

/

1178

/

[2023] 1 एस सी आर।

01.01.1986, जो 31.12.1989 पर समाप्त हो गया, और MSFC ने वेतन संशोधन को 01.01.1990 से प्रभावी बनाने पर विचार किया। एम. एस. एफ. सी. के निदेशक मंडल द्वारा राज्य सरकार को वेतन संशोधन का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था। वेतन और परिलब्धियों के संशोधन को एमएसएफसी के निदेशक मंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था, और इसे वर्ष 1996 में अंतिम अनुमोदन के लिए महाराष्ट्र राज्य को भेजा गया था। उक्त संशोधन की मंजूरी के लिए और पांच संशोधनों को रखा गया था। उन संशोधनों पर विचार करने के बजाय, एमएसएफसी के निदेशक मंडल ने वेतन आयोग की सिफारिशों को मनमाने ढंग से लागू किया। संशोधित वेतन का लाभ केवल प्रासंगिक समय पर काम करने वाले मौजूदा 115 कर्मचारियों को दिया गया था, और 900 पूर्व कर्मचारियों को समान लाभों से वंचित कर दिया गया था, हालांकि संशोधन उनके लिए क्रमशः उनकी सेवा अवधि के लिए लागू था।

/

/

8. यह प्रस्तुत किया गया था कि वेतन संशोधन का लाभ देने के लिए कट-ऑफ तिथि मनमाना है, क्योंकि कई कर्मचारी लंबे वर्षों की वफादार सेवा के बाद सेवानिवृत्त हो गए थे। वे किसी भी वेतन संशोधन के लाभ से केवल इसलिए वंचित रहेंगे क्योंकि एमएसएफसी ने उनकी सेवानिवृत्ति के बाद एक विशेष तिथि पर निर्णय को लागू करने का विकल्प चुना था।

/

9. यह भी आग्रह किया गया कि राज्य और एमएसएफसी उन व्यक्तियों के बीच भेदभाव नहीं कर सकते जिन्होंने एक ही अवधि के दौरान काम किया और अपने जनादेश के अनुसार अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया, केवल इसलिए कि उनमें से कुछ सेवानिवृत्त हो गए थे। इस प्रकार, इस मामले में तारीख का निर्धारण मनमाना है क्योंकि यह वेतन संशोधन के लाभ से वंचित करता है-जो अन्यथा उन सभी कर्मचारियों के लिए लागू किया जाता है जिन्होंने एक विशेष अवधि के दौरान काम किया था-उन लोगों के लिए जिन्होंने उक्त अवधि में काम करने के बावजूद नौकरी छोड़ दी थी। यह प्रस्तुत किया गया था कि जिन लोगों ने 2000-2005 की अवधि के लिए काम किया, वे कर्मचारियों के एक ही वर्ग में हैं, जिन्होंने तथाकथित कट-ऑफ तिथि, यानी 01.01.2006 के बाद काम किया था।

/

/

10. यह प्रस्तुत किया गया था कि महाराष्ट्र सरकार के निर्देशों के अनुरूप, पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशों के अनुसार, सितंबर, 1993 से एमएसएफसी द्वारा उन सभी लोगों को तीन अंतरिम राहत दी गई थी, जो अंततः सेवानिवृत्ति के कारण वेतन संशोधन से वंचित थे।

/

11. यह भी तर्क दिया गया कि सितंबर, ए से अंतरिम राहत और मौजूदा कर्मचारियों को भुगतान की गई तदर्थ राशि की कोई वसूली (आक्षेपित जी. आर. दिनांक 29.03.2010 के तहत) नहीं की गई।

/

1179

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

1993 जुलाई, 2001 तक, जो दर्शाता है कि पाँचवें वेतन आयोग की सिफारिशों को 01.01.1996 से लागू किया गया था।

12. श्री साल्वा ने आगे कहा कि पूर्व कर्मचारियों के संबंध में एमएसएफसी की कुल देनदारी 32 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है, जिसमें वे भी शामिल हैं जो सेवानिवृत्त हुए थे, वीआरएस की मांग की थी या वेतन संशोधन को प्रभावी बनाने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई थी। आदेश जारी होने की तारीख तक मौजूदा कर्मचारियों का आंकड़ा 114 था; 130 सेवानिवृत्त हो चुके थे और 631 ने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की मांग की थी। हालाँकि, उन सभी को लाभ हुआ था और एमएसएफसी के आदेशों के माध्यम से 30 प्रतिशत की सीमा तक अंतरिम राहत मिली थी। इन परिस्थितियों में, मौजूदा कर्मचारियों को एक समान बड़े समूह से अलग करना, छोड़ दिए गए लोगों के खिलाफ शत्रुतापूर्ण भेदभाव के बराबर था।

/

/

13. यह प्रस्तुत किया गया था कि जिन लोगों ने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की मांग की थी, उन्हें इस आधार पर नहीं छोड़ा जा सकता है कि उन्होंने लाभ प्राप्त किए थे और अपना कार्यकाल पूरा नहीं किया था। इस संबंध में श्री साल्वा ने वी. आर. एस. योजना 2 की निम्नलिखित शर्त (खंड 5) पर भरोसा व्यक्त किया:

/

“जिन अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का अनुरोध निगम द्वारा स्वीकार किया जाता है, वे वेतनमान और भत्तों के संशोधन के कारण बकाया के भुगतान के हकदार होंगे और साथ ही वेतनमान के संशोधन के कारण उन्हें प्राप्त स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लाभों के अंतर के लिए भी, यदि और जो बोर्ड द्वारा निगम के कर्मचारियों के लिए पूर्वव्यापी रूप से प्रभावी किया जा सकता है और महाराष्ट्र सरकार और आई. डी. बी. आई. द्वारा अनुमोदित किया जा सकता है।

/

14. कर्नल बी. जे. में इस न्यायालय के फैसलों पर भरोसा रखा गया था।

अकारा (सेवानिवृत्त) बनाम भारत सरकार 3, डी. एस. नकारा बनाम भारत संघ 4 से

/

आग्रह करें कि नियोक्ता कर्मचारियों के एक समान वर्ग के साथ भेदभाव और विभाजन नहीं कर सकता है, और उनमें से एक वर्ग को कट-ऑफ तिथि के कृत्रिम उपकरण से वंचित नहीं कर सकता है।

एमएसएफसी की दलीलें

15. उत्तरदाताओं-राज्य सरकार और एम. एस. एफ. सी. की ओर से पेश विद्वान वकील श्री सचिन पाटिल ने आग्रह किया कि आक्षेपित निर्णय में हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। यह प्रस्तुत किया गया था कि एमएसएफसी राज्य वित्तीय निगम के अंतर्गत स्थापित एक स्वायत्त निगम है

/

2 एमएसएफसी के कार्यालय आदेश संख्या 14 दिनांक 29.03.1996 3 [2006] 7 सप्लीमेंट द्वारा प्रस्तुत किया गया। एससीआर 58; (2006) 11 एससीसी 709

4 [1983] 2 एससीआर 165; (1983) 1 एससीसी 305

/

एक्ट करें। यह महाराष्ट्र सरकार के कर्मचारियों के लिए लागू नियमों और शर्तों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है। वास्तव में, उसे अपने कर्मचारियों के लिए वेतन में वृद्धि या मजदूरी में वृद्धि के कारण किसी भी अतिरिक्त बोझ या व्यय को पूरा करने के लिए स्वतंत्र रूप से अपने संसाधनों से अपनी आय उत्पन्न करनी होती है। यह प्रस्तुत किया गया था कि राज्य वित्तीय निगम अधिनियम, 1951 की धारा 39 के अंतर्गत इसे नीतिगत मामलों में राज्य सरकार से मार्गदर्शन और निर्देश लेने होते हैं।

/

16. यह प्रस्तुत किया गया कि एमएसएफसी अपने कर्मचारियों के लिए चौथे, पांचवें और छठे वेतन आयोग के निर्णयों को लागू करने के राज्य के निर्णय से बाध्य नहीं है। वास्तव में, राज्य ने निगम को इस तरह की वेतन आयोग की सिफारिशों को लागू करने का निर्देश कभी नहीं दिया। इसने केवल अपने दिनांकित 23.09.2010 पत्र के संदर्भ में निगम के कर्मचारियों को पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशों का लाभ देने के प्रस्ताव को मंजूरी दी। इससे पहले, राज्य ने 24.07.1996 पर निदेशक मंडल द्वारा पारित प्रस्ताव को मंजूरी देने से इनकार कर दिया था।

/

17. यह भी तर्क दिया गया कि निगम के कर्मचारी एमएसएफसी की इस तरह की वेतन वृद्धि का बोझ वहन करने की क्षमता के बिना, अधिकार के रूप में, वेतन संशोधन के किसी भी लाभ का दावा नहीं कर सकते। विद्वान वकील ने इस बात पर प्रकाश डाला कि निगम घाटे में चल रहा था जिसके परिणामस्वरूप अपीलार्थियों द्वारा दावा की गई शर्तों में लाभ देने का कोई औचित्य नहीं था।

/

/

18. यह प्रस्तुत किया गया था कि कट-ऑफ तिथि का निर्धारण एक नीतिगत मामला है, विशेष रूप से राज्य निगम के कर्मचारियों के वेतन, भत्तों और अन्य लाभों के संशोधन के संबंध में। ये वित्तीय बाधाओं और इसमें शामिल कर्मचारियों की संख्या सहित विभिन्न विचारों पर निर्भर करते हैं। यह आग्रह किया गया कि एक नियोक्ता की भुगतान क्षमता इस तरह की कवायद का एक महत्वपूर्ण और वैध विचार है। कर्मचारियों को कोई भी लाभ देने में आम तौर पर कट-ऑफ तिथि तय करना शामिल होता है। यदि इन कारकों को ध्यान में रखा जाए, तो निगम के कर्मचारियों के लिए एक सीमित पूर्वव्यापी सीमा तैयार करने से वित्तीय बोझ का प्रभाव कम हो जाता है। इस प्रकार, वर्तमान मामले में कट-ऑफ तिथि का निर्धारण मनमाना नहीं था।

/

/

19. यह आग्रह किया गया कि वी. आर. एस. का विकल्प चुनकर एम. एफ. एस. सी. से समय से पहले सेवानिवृत्त होने वालों का दावा दोनों पक्षों, यानी निगम और सेवानिवृत्त कर्मचारी को लाभान्वित करने के लिए था। निगम को वेतन बकाया के प्रति अपनी देनदारी कम करने से लाभ हुआ; दूसरी ओर, संबंधित कर्मचारी किसी भी योजना से बाध्य नहीं था, लेकिन ए का प्रयोग करता था।

/

1181

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

रोजगार से अलग होने का स्वतंत्र और स्वैच्छिक विकल्प। इन कारणों से, ऐसे कर्मचारी उस पैकेज के संबंध में लाभ प्राप्त करने के हकदार थे, जिसे आम तौर पर गोल्डन हैंडशेक कहा जाता है, यदि वे अनुग्रह राशि के भुगतान के माध्यम से सेवा में बने रहते, तो वे जितना कमाते, उससे अधिक लाभ प्राप्त करने के हकदार थे। अन्य अंतिम बकाया के साथ ऐसी राशि के भुगतान से रोजगार बंद हो गया; परिणामस्वरूप, ऐसे कर्मचारियों का दावा, जिन्होंने पहले ही वेतन संशोधन के लिए अनुग्रह राशि के रूप में लाभ प्राप्त कर लिया है, उचित नहीं था। यह प्रस्तुत किया गया था कि अपीलकर्ता संघ की शिकायत 835 पूर्व कर्मचारियों के कारण का समर्थन करती है, जिनमें से बड़ी संख्या में वे हैं जिन्होंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का विकल्प चुना था। उनकी ओर से भेदभाव की कोई शिकायत नहीं हो सकती है। यह प्रस्तुत किया गया था कि वित्तीय बाधाओं के अलावा, उन 115 मौजूदा कर्मचारियों के लिए वेतन लाभ को सीमित करने का दूसरा स्वतंत्र औचित्य सही है, यानी उन्हें गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एन. पी. ए.) खातों से अधिकतम राशि की वसूली के लिए प्रेरित करना। यह तर्क प्रासंगिक है क्योंकि एमएसएफसी को पिछले कुछ वर्षों से नुकसान उठाना पड़ा है।

/

/

/

20. विद्वान वकील श्री पाटिल ने कुछ निर्णयों पर भरोसा किया

न्यायालय , ए. के. बिंदल और अन्न बनाम भारत संघ और अन्य। 5. पंजाब राज्य और अन्य बनाम अमर नाथ गोयल और अन्य। 6 और राजस्थान राज्य और अन्न बनाम

अमृतलाल गांधी और अन्य। 7. यह आग्रह करना कि नियोक्ता पर वित्तीय प्रभाव एक प्रासंगिक कारक है जिसे न्यायालय को यह निर्णय लेते समय तौलना चाहिए कि क्या किसी नीति का कार्यान्वयन मनमाना है।

/

विश्लेषण और निष्कर्ष

21. तथ्यों के गहन विश्लेषण से पता चलता है कि एमएसएफसी के कर्मचारियों के वेतन संशोधन का प्रश्न काफी समय से ध्यान आकर्षित कर रहा है। जाहिर है, पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशें राज्य सरकार द्वारा 01.01.1996 से की गई थीं और उन्हें लागू किया गया था। हालाँकि, एम. एस. एफ. सी. ने अपने कर्मचारियों के लिए उन मानकों को अपनाने या न अपनाने को अंतिम रूप नहीं दिया और राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजा (जैसा कि राज्य वित्तीय निगम अधिनियम की धारा 39 के अंतर्गत प्रदान किया गया है)। इस बीच, सभी मौजूदा कर्मचारियों को वेतन संशोधन की अंतरिम राहत दी गई। वेतन संशोधनों के लिए अंतरिम राहत देने वाले इनमें से कुछ आदेशों को रिकॉर्ड में रखा गया है। वे आदेश/निर्णय दिनांकित 03.03.1994 (कार्यालय आदेश) हैं।

/

/

5 [2003] 3 एससीआर 928; (2003) 5 एससीसी 563

6 [2005] 2 पूरक।एस. सी. आर. 549; (2005) 6 एस. सी. सी. 754 7 (1997) 2 एस. सी. सी. 342

/

1182

/

[2023] 1 एस सी आर।

No.191); 03.03.1994 (कार्यालय आदेश सं। 19); 11.10.1995 (कार्यालय आदेश No.73); और 07.09.1996 (कार्यालय आदेश No.66), जो अपील अभिलेख का हिस्सा हैं। वे कर्मचारी जो 01.01.1996 और 29.03.2010 के बीच MSFC के रोल पर थे, वे इन अंतरिम भुगतानों के लाभों का आनंद लेते थे। आई. डी. 1 पर, एम. एस. एफ. सी. ने पाँचवें वेतन आयोग की वेतन संशोधन सिफारिशों को लागू करने का निर्णय लिया। 22. उन कर्मचारियों के संबंध में वेतन संशोधन को प्रभावी बनाने का निर्णय जो मौजूदा कर्मचारी थे और 01.01.2006 से देय बकाया को सीमित करने का निर्णय महाराष्ट्र राज्य के दिनांक 29.03.2010 8 के पत्र पर आधारित है। उस निर्णय को सुनवाई के दौरान रिकॉर्ड में रखा गया था और इस प्रकार है:

/

/

“महाराष्ट्र सरकार

सरकारी निर्णय सं। एस. एफ. सी. 2009/(422) इंड-7 उद्योग, ऊर्जा और श्रम विभाग, मंत्रालय, मुंबई-400032

/

तिथि 29 मार्च, 2010

परिचय:

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम के अंतर्गत कर्मचारियों के लिए 5 वें वेतन आयोग के कार्यान्वयन का प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन था। सरकार ने इस संबंध में निम्नलिखित निर्णय लिया है।

/

सरकार का फैसला:

सरकार ने इस आदेश के माध्यम से महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम के कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए निम्नलिखित शर्तों के अधीन 5 वें आयोग के अनुसार संशोधित वेतनमान के कार्यान्वयन के लिए अपनी सहमति दी है, जैसा कि संलग्न अनुलग्नक 'ए' के कॉलम संख्या 5 में दिखाया गया है।

/

1. 5 वें वेतन आयोग के अनुसार संशोधित वेतन निगम के रोल पर अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए डब्ल्यू. ई. एफ. 01.01.2006 लागू किया जाएगा जैसा कि निगम के अनुलग्नक 'ए' के कॉलम संख्या 3 में उल्लिखित है।

/

2. संशोधित वेतनमान के कारण कोई बकाया राशि 01.01.2006 से पहले लागू नहीं की जाएगी।

8 निर्णय सं। एस. एफ. सी. 2009/(422)/इंड-7।

/

1183

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

/

3. महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम को अपनी आय से वेतनमान में उपरोक्त संशोधन के कारण देनदारियों (वेतन और बकाया) को वहन करना होगा। सरकार इसके लिए कोई वित्तीय प्रावधान नहीं करेगी।

4. संशोधित वेतनमान के अनुसार, अन्य पात्र भत्ते नियमों के अनुसार कर्मचारियों को देय होंगे।

/

5. निगम को कर्मचारी संघ से संशोधित वेतनमान के संबंध में एक वचन पत्र प्राप्त करना चाहिए।
2. यह सरकारी निर्णय वित्त विभाग के अनौपचारिक संदर्भ संख्या के संदर्भ में जारी किया गया है। 23/2010/पी. यू. दिनांक 05.02.2010।

/

महाराष्ट्र के राज्यपाल के नाम और आदेश में। "

23. आई. डी. 1 दिनांकित कार्यालय आदेश द्वारा, एम. एस. एफ. सी. ने महाराष्ट्र सरकार के निर्णय को लागू करने और निगम के उन कर्मचारियों को पांचवें वेतन आयोग का लाभ देने का निर्णय लिया जो उस तारीख को इसके रोल पर थे। उस आदेश 9 में ही एक कारण है कि कट-ऑफ तिथि का सहारा क्यों लिया गया, जैसा कि इसकी स्पष्ट शर्तों से स्पष्ट है, यानी कि राज्य सरकार ने उस कट-ऑफ तिथि को मंजूरी दी थी।

/

वर्तमान कर्मचारियों को अधिकतम राशि की वसूली के लिए प्रेरित करने के लिए

एन. पी. ए. खाते "प्रासंगिक पैरा इस प्रकार है:

/

"महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम प्रमुख कार्यालय, मुंबई

एम. एस. एफ. सी./एच. ओ./पी. एंड ए. डी./पी. आर./2010-11/28 9 अप्रैल, 2010
कार्यालय आदेश संख्या 1

री: निगम के कर्मचारियों के लिए पांचवें वेतन आयोग का कार्यान्वयन

/

1. महाराष्ट्र सरकार ने वर्तमान कर्मचारियों को एन. पी. ए. खातों में अधिकतम राशि की वसूली के लिए प्रेरित करने के लिए, अपने जी. आर. No.SFC-2009 (422)/उद्योग-7 दिनांक <आई. डी. 2 के माध्यम से निगम के उन कर्मचारियों के लिए पांचवां वेतन आयोग लागू करने का निर्णय लिया है जो सरकारी जी. आर. जारी होने की तारीख तक निगम की सूची में हैं, जो उक्त जी. आर. में उल्लिखित नियमों और शर्तों के अधीन हैं।

/

XXXXXXXXXXXX "

9 कार्यालय आदेश संख्या 1 दिनांकित 09.04.2010

/

/

[2023] 1 एस सी आर।

24. वेतन संशोधन का लाभ निगम के कर्मचारियों पर लागू किया गया था; निर्धारण के नियम और शर्तें और लाभों का अनुदान जिस हद तक वे प्रासंगिक हैं, नीचे दिए गए हैं:

“शर्तें और शर्तें:

(i) संशोधित वेतनमान उन कर्मचारियों पर लागू किया जाएगा जो वर्तमान में सरकार से जुड़े अनुलग्नक 'ए' में उल्लिखित एमएसएफसी की सूची में हैं। जीआर दिनांकित 29.03.2010।

/

((ii) संशोधित वेतन पांचवें वेतन आयोग के फार्मूले के अनुसार डब्ल्यू. ई. एफ. 01.01.1996 निर्धारित किया जाएगा।

/

(iii) निगम के कर्मचारियों को 01.01.1996 से 31.12.2005 तक बकाया राशि के लिए पात्र नहीं ठहराया जाएगा।

XXXXXX

XXXXXX

XXXXXX

(x) 01.01.2006 से 31.03.2010 तक भुगतान की गई अंतरिम राहत (IR) कर्मचारियों को भुगतान किए जाने वाले बकाया से वसूल की जाएगी। हालांकि, 18.09.96 से 31.12.2005 तक भुगतान की गई अंतरिम राहत की वसूली नहीं की जाएगी।

/

(xi) संशोधित वेतनमान के अनुसार वेतन का भुगतान 01.04.2010 से किया जाएगा और 01.01.2006 से 31.03.2010 तक की अवधि के लिए बकाया का भुगतान 31 मई, 2010 को या उससे पहले दो किश्तों में किया जाएगा। "

/

उक्त आदेश में संशोधित वेतनमान शर्त के अनुसार वेतन का निर्धारण इस प्रकार है:

“6. संशोधित वेतनमान के अनुसार वेतन का निर्धारण: निगम के कर्मचारियों का संशोधित वेतन नीचे बताए गए पांचवें वेतन आयोग के सूत्र के अनुसार 01.01.1996 से निर्धारित किया जाएगा:

/

स्थिरीकरण सूत्र:

1. 01.01.1996 पर पुराना मूल वेतन

/

2. जोड़ें: 01.01.1996 पर लागू डीए

3. जोड़ें: पहली अंतरिम राहत की राशि यानी Rs.100-केवल। 4. जोड़ें: दूसरी अंतरिम राहत की राशि अर्थात् पुराने मूल वेतन का 10 प्रतिशत (न्यूनतम Rs.100-के अधीन)।

/

1185

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

/

5. जोड़ें: 40% पुराने मूल वेतन का 01.01.1996 के रूप में

लोडिंग।=कुल (1 से 5) "

25. अपीलकर्ताओं ने अभिलेख पर रखा है और एमएसएफसी की दिनांकित बोर्ड बैठक के कार्यवृत्त पर भरोसा किया है, जिसमें मद संख्या 9 में वेतन संशोधन के प्रश्न पर चर्चा की गई थी। आइटम नं. में रखा गया नोट। 2 उक्त नोट इस प्रकार है:

/

"2. निगम ने सितंबर से अंतरिम राहत दी है। 1993 महाराष्ट्र सरकार की तर्ज पर वेतन बिक्री में प्रस्तावित संशोधन की दिशा में निम्नानुसार:

तिथि	राशि (रु.)
16.09.1993	100/- पी. एम
01.06.1995	10% मूल वेतन पी. एम
01.04.1996	10% मूल वेतन पी. एम

/

उपरोक्त अंतरिम राहत के अलावा, निगम ने सितंबर, 1996 से जुलाई, 2001 तक वेतनमान में संशोधन के लिए एकमुश्त तदर्थ राशि भी दी:

/

श्रेणी	राशि (रु.)
वर्ग "ए" कर्मचारी	34,375/-
"बी" श्रेणी के कर्मचारी	28,480/-
वर्ग "सी" कर्मचारी	22,585/-

/

नोट में संबंधित कर्मचारियों की संख्या भी दी गई है, जो इस प्रकार है:

“01.01.1996 पर निगम की सूची में 950 कर्मचारी थे। निगम ने मौजूदा कर्मचारियों को भुगतान की गई बकाया राशि के औसत आधार पर बकाया राशि का निर्धारण किया है। कुल शुद्ध देयता रु। अंतरिम राहत और तदर्थ भुगतान की राशि में कटौती के बाद 39.08 करोड़, जिसका विवरण नीचे दिया गया है:

/

(रु. करोड़ में)

/

Sr.No।	विशिष्टताएँ	कर्मचारियों की संख्या	औसत आधार पर अनुमानित बकाया राशि	अंतरिम राहत की राशि और भुगतान की गई तदर्थ राशि	शुद्ध बकाया राशि।
1	कर्मचारी	114	7.49	1.07	6.42

/

1186 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

	जी. आर. डी. टी. डी. की तारीख तक मौजूद। 29.03.2010				
/	सेवानिवृत्त कर्मचारी	/	6.96	1.02	5.94

3	वीआरएस कर्मचारी	631	29.02	4.65	24.37
/	नौकरी छोड़ चुके कर्मचारी	21	0.66	0.11	0.55
/	नौकरी से निकाले गए कर्मचारी	48	1.96	0.29	1.67
/	कर्मचारियों को किया गया बर्खास्त	/	0.12	0.01	0.11
7	कर्मचारियों को किया गया बर्खास्त	/	0.02	0	0.02
कुल	950	46.23	7.15	39.08	

/

/

26. इन तथ्यों से यह ध्यान देने योग्य है कि पांचवें वेतन आयोग की सिफारिशों के संदर्भ में वेतन संशोधन के लाभ से इनकार करने के लिए एमएसएफसी द्वारा दो औचित्य प्रदान किए गए थे। एक, कि यह "क्रम में" है

वर्तमान कर्मचारियों को एन. पी. ए. में अधिकतम राशि की वसूली के लिए प्रेरित करें।

/

लेखा. "और दो, कि कट-ऑफ तिथि का निर्धारण राज्य के नीति निर्माण क्षेत्र के भीतर आता है, जिसमें अन्य शामिल हैं-एक महत्वपूर्ण विचार, जो राज्य की वित्तीय चिंताएं हैं, जिसमें न्यायालय को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

27. यह कि क्या, और वेतन संशोधन की सीमा क्या होनी चाहिए, निस्संदेह कार्यकारी नीति निर्माण के दायरे में आने वाले मामले हैं। साथ ही, एक व्यापक जनहित शामिल है, जो सार्वजनिक अधिकारियों और कर्मचारियों के वेतन में संशोधन को प्रेरित करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ठोस सार्वजनिक नीति के विचारों ने केंद्र और राज्य सरकारों और अन्य सार्वजनिक नियोक्ताओं को प्रभावित किया है, जिन्होंने समय-समय पर (आमतौर पर पिछले 50 वर्षों या उससे अधिक समय से दशक में एक बार) वेतन संशोधन अभ्यास किए हैं। इस तरह के आवधिक वेतन संशोधनों का कारण यह सुनिश्चित करना है कि सार्वजनिक कर्मचारियों को मिलने वाले वेतन और परिलब्धियां जीवन यापन की बढ़ती लागत और सामान्य मुद्रास्फीति के रुझानों के साथ तालमेल बनाए रखें और यह सुनिश्चित करें कि इससे कर्मचारियों पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। वेतन संशोधन अन्य उद्देश्यों को भी कम करते हैं, जैसे कि सार्वजनिक रोजगार के प्रति प्रतिबद्धता और निष्ठा की एक नई भावना को प्रोत्साहित करना। एक अन्य महत्वपूर्ण जनहित विचार यह है कि इस तरह के संशोधन लोक सेवकों को संतुष्टि के प्रलोभन से रोकने के लिए हैं; अपने कार्यों के निर्वहन के लिए धन या अन्य प्रलोभन स्वीकार करके अपनी आय को बढ़ाने के लिए।

/

/

/

/

1187

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

/

28. संविधान 10 का अनुच्छेद 43 राज्य को यह सुनिश्चित करने के लिए बाध्य करता है कि सभी श्रमिकों, औद्योगिक या अन्य, को जीवन निर्वाह मजदूरी प्रदान की जाए और एक सभ्य जीवन स्तर का आश्वासन दिया जाए। इस संदर्भ में, इस न्यायालय के पिछले फैसलों में महंगाई भत्ते के माध्यम से मूल्य वृद्धि को बेअसर करने के लिए एक तंत्र प्रदान करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड बनाम. बी. एन. डोंगरे 11, न्यायालय ने समझाया कि अगर भुगतान करें

/

पैकेट "जमे हुए" होते हैं, मजदूरी की क्रय शक्ति कम हो जाएगी, और वास्तविक मजदूरी में गिरावट आएगी, जिसे बेअसर करने की आवश्यकता है। न्यायालय ने यह भी नोट किया कि सबसे कम वेतन वाले लोगों को पूरी तरह से बेअसर करने और उच्चतम स्तर पर रहने वालों को इस तरह के भत्ते में से सबसे कम दिए जाने के साथ, महंगाई भत्ते के माध्यम से मजदूरी का तटस्थीकरण "घटते पैमाने" पर है।

/

"इसलिए श्रमिक अपनी मेहनत के लिए मिलने वाले वेतन की क्रय शक्ति के बारे में चिंतित हैं। यदि वेतन-पैकेट में वृद्धि आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के साथ नहीं चलती है तो वेतन-पैकेट की क्रय शक्ति गिर जाती है जिससे वास्तविक मजदूरी कम हो जाती है जिससे श्रमिकों और उनके परिवारों का बुरा हाल हो जाता है। इसलिए, यदि मुद्रास्फीति के कारण कीमतें बढ़ती हैं, जबकि वेतन स्थिर रहता है, तो वास्तविक मजदूरी में तेजी से गिरावट आएगी। मुद्रास्फीति की अवधि में ऐसा ही होता है। वास्तविक मजदूरी में इस तरह की गिरावट को रोकने के लिए कीमतों में वृद्धि के लिए विभिन्न तरीके अपनाए जाते हैं। कॉस्ट-ऑफ-लिविंग स्लाइडिंग स्केल सिस्टम में बुनियादी मजदूरी स्वचालित रूप से कॉस्ट-ऑफ-लिविंग इंडेक्स द्वारा दिखाए गए मूल्य परिवर्तनों के साथ समायोजित हो जाती है। इस तरह श्रमिकों की मजदूरी की क्रय शक्ति को यथासंभव और

आवश्यक बनाए रखा जाता है। हालांकि, लीप-फ्रॉगिंग से बचना चाहिए। कलकत्ता ट्रामवेज कं. लिमिटेड के क्लर्क और डिपो कैशियर्स में यह न्यायालय बनाम. कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी लिमिटेड [ए. आई. आर. 1957 एस. सी. 78] ने कहा कि मुद्रास्फीति के रुझानों को रोकने के लिए महंगाई भत्ता देते समय जीवन यापन की लागत के प्रतिशत तटस्थीकरण से बचा जाना चाहिए। यही कारण है कि हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड बनाम. कर्मचारी [ए. आई. आर. 1963 एस. सी. 1332] दास गुप्ता, जे. ने कहा कि अनुदान देने का पूरा उद्देश्य

/

/

/

/

10 “ अनुच्छेद 43। श्रमिकों के लिए जीवन निर्वाह मजदूरी आदि राज्य द्वारा सुरक्षित करने का प्रयास करेगा -

उपयुक्त विधान या आर्थिक संगठन या किसी अन्य तरीके से, सभी श्रमिकों के लिए, चाहे वे कृषि, औद्योगिक या अन्य हों, काम, जीवन निर्वाह मजदूरी, काम की स्थितियां जो जीवन के एक सभ्य स्तर को सुनिश्चित करती हैं और अवकाश और सामाजिक और सांस्कृतिक अवसरों का पूरा आनंद लेती हैं और विशेष रूप से, राज्य ग्रामीण क्षेत्रों में व्यक्तिगत या सहकारी आधार पर कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने का प्रयास करेगा। ”

11 [1994] 2 पूरक। एससीआर 217; (1994) 6 एससीसी 157

/

1188 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

श्रमिकों को महंगाई भत्ता जीवन यापन की लागत में वृद्धि के हिस्से को बेअसर करने के लिए, यह आम तौर पर एक फिसलते पैमाने पर होना चाहिए और जीवन यापन की लागत बढ़ने पर वृद्धि और गिरने पर कमी का प्रावधान करना चाहिए। इसी सिद्धांत को बंगाल केमिकल एंड फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड बनाम में दोहराया गया था। कामगार [ए. आई. आर. 1969 एस. सी. 360] और श्री चलथन विभाग खंड उद्योग सहकारी मंडली लिमिटेड बनाम. जी. एस. बारोट, सदस्य, औद्योगिक न्यायालय, गुजरात [(1979) 4 एस. सी. सी. 622] और इस बात पर जोर दिया गया कि आम तौर पर कर्मचारियों के निम्नतम वर्ग को छोड़कर पूर्ण तटस्थता नहीं दी जाती है और वह भी एक स्लाइडिंग पैमाने पर। ”

/

29. इसलिए, राज्य और सार्वजनिक नियोक्ताओं का दायित्व है कि वे सार्वजनिक हित के एक उपाय के रूप में, मूल्य वृद्धि के कारण जीवन यापन की लागत में वृद्धि के दुष्प्रभावों को संबोधित करें, जिसके परिणामस्वरूप वास्तविक मजदूरी में गिरावट आती है। इस दायित्व का समय-समय पर निर्वहन किया जाना चाहिए। फिर भी, इस तरह के वेतन संशोधन कब किए जाने हैं और किस हद

तक संशोधन किए जाने चाहिए, इस बारे में कोई स्टैट्यूट फॉर्मूला नहीं हो सकता है। एक सामान्य प्रथा के रूप में, केंद्र और राज्य सरकारें हर दशक में इस तरह के अभ्यास करती रही हैं।

/

/

30. इस मामले के तथ्यों पर लौटते हुए, यह स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं ने संशोधित वेतनमान के अनुदान को 29.03.2010 पर मौजूद कर्मचारियों तक सीमित कर दिया है। जबकि लाभों के अनुदान के लिए कट-ऑफ तिथि के निर्धारण पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है, न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में क्या है, इस तरह के निर्धारण के प्रभाव की जांच करना है और क्या इसके परिणामस्वरूप भेदभाव होता है। वर्तमान मामले में, वेतन संशोधन के लिए वेतन आयोग की सिफारिशें 01.01.1996 से प्रभावी थीं। हालांकि, राज्य और एम. एस. एफ. सी. ने उस तारीख से इसे लागू नहीं करने का फैसला किया, लेकिन एक दशक बाद आई. डी. 1 से प्रभावी होने के कारण, क्योंकि एम. एस. एफ. सी. की सूची पर कर्मचारियों को (या बकाया) लाभ दिया जाता है।

/

/

29.03.2010 1 से देय बकाया तक सीमित या सीमित थे

जनवरी 2006। उसी समय, वेतन का निर्धारण और निर्धारण 1 जनवरी 1996 से एमएसएफसी के परिपत्र दिनांक 09.04.2010 के पैरा 6 के संदर्भ में प्रभावी था, जिसमें यह निर्धारित किया गया था कि संशोधित वेतन "होगा

जैसा कि नीचे उल्लेख किया गया है, पाँचवें वेतन आयोग के सूत्र के अनुसार 01.01.1996 से प्रभावी है। सूत्र यह था: "01.01.1996 पर पुराना मूल वेतन जोड़ें 01.01.1996 पर लागू डीए जोड़ें पहली अंतरिम राहत की राशि, यानी Rs.100-केवल। जोड़ें: दूसरी अंतरिम राहत की राशि, यानी पुराने मूल वेतन का 10 प्रतिशत (न्यूनतम Rs.100-के अधीन)। जोड़ें: 40% पुराने मूल भुगतान का 01.01.1996 पर लोडिंग = कुल के रूप में

/

(1 5 तक) "। इस फिटमेंट सूत्र ने स्पष्ट रूप से ए में निर्धारण की कल्पना की।

/

1189

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

नए तराजू, भले ही काल्पनिक रूप से, 01.01.1996 से। बकाया राशि दी गई।

देय, उस फिटमेंट और निर्धारण के आधार पर, 01.01.2006 से प्रभाव के साथ। 31. एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अंतरिम राहत का निर्देश दिया गया था और सभी कर्मचारियों को 01.01.1996 और 29.03.2010 के बीच देय किया गया था। 09.04.2010 पर जारी आदेश में कहा गया है कि "अंतरिम राहत"

18.09.1996 से 31.12.2005 तक का भुगतान वापस नहीं लिया जाएगा। यह

/

यह दर्शाता है कि जो लोग इन तिथियों के बीच सेवानिवृत्त हुए, और जो सेवा में बने रहे, वे एक ही वर्ग का हिस्सा हैं। इसके अलावा, उन लोगों के बीच भी कोई अंतर नहीं है जो 01.01.2006 पर सेवा में हैं लेकिन 29.03.2010 से पहले सेवानिवृत्त हुए हैं और जो उसके बाद भी जारी रहे।

32. इस न्यायालय ने जम्मू-कश्मीर राज्य बनाम त्रिलोकी नाथ खोसा 12 में निर्णय दिया कि "भेदभाव वर्गीकरण का सार है और समानता की संवैधानिक गारंटी के लिए हिंसा केवल तभी करता है जब यह एक

/

अनुचित आधार"। प्रश्न यह है कि क्या वर्गीकरण, 29.03.2010 से पहले सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को छोड़कर और वेतन संशोधन लाभों को सीमित करने (हालाँकि 01.01.2006 से प्रभावी) के परिणामस्वरूप भेदभाव होता है।

/

33. महाराष्ट्र वन रक्षक और वन रक्षक संघ बनाम राज्य

महाराष्ट्र के 13 में स्नातक वन रक्षक के लिए वनपाल के पद पर पदोन्नति के लिए कोई कोटा आरक्षित नहीं था। पचहत्तर प्रतिशत पदों को वरिष्ठता के आधार पर नियमित पदोन्नति चैनल के माध्यम से और पँचिश प्रतिशत को उपयुक्त व्यक्तियों के चयन द्वारा भरा जाना था।

/

अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक (प्रशासन अधीनस्थ संवर्ग), महाराष्ट्र राज्य, नागपुर द्वारा "सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा" के परिणाम के आधार पर तैयार की गई सामान्य योग्यता सूची के आधार पर वन रक्षक के पद पर आसीन व्यक्तियों में से एक और शर्त

सीमित विभागीय परीक्षा का प्रयास करने वालों पर यह लागू किया गया था कि केवल स्नातक ही आवेदन कर सकते हैं और उपस्थित हो सकते हैं; उस शर्त को चुनौती दी गई थी। इस न्यायालय ने माना कि शर्त अस्वीकार्य थी, क्योंकि यह एक वर्ग के भीतर एक वर्ग बनाने के बराबर है:

/

“चुनौती एल. डी. सी. ई. में उपस्थित होने की पात्रता पर आगे की कठोरता पर है। एल. डी. सी. ई. का पूरा उद्देश्य योग्यता के आधार पर त्वरित पदोन्नति प्राप्त करने के लिए वन रक्षकों को प्रोत्साहित करना और सुविधा प्रदान करना है। चूंकि तीन-चौथाई पदों पर पदोन्नति के लिए वरिष्ठता मानदंड है, इसलिए एक-चौथाई को प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेने का मौका दिया जाता है। यह भी है

/

12 [1974] 1 एससीआर 771; (1974) 1 एससीसी 19 13 [2017] 14 एससीआर 446; (2018) 1 एससीसी 149

/

1190 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उच्च शैक्षणिक योग्यता के आधार पर कोई कोटा निर्धारित नहीं है। स्थिति अलग होती अगर, पहली जगह में, एक वर्गीकरण होता जिसमें 75 प्रतिशत पदों को वरिष्ठता के आधार पर भरा जाना होता और 25 प्रतिशत स्नातकों के लिए आरक्षित होता और फिर से प्रतियोगी परीक्षा में अंतर योग्यता के अधीन होता। वर्तमान स्थिति में ऐसा नहीं है। एल. डी. सी. ई. वरिष्ठता की परवाह किए बिना वन रक्षकों के पूरे समूह से पदोन्नति के लिए चयन के लिए है, लेकिन न्यूनतम पांच साल की सेवा के अधीन है। उस स्थिति में, स्नातकों के लिए कोई कोटा आरक्षित किए बिना एल. डी. सी. ई. में भाग लेने के लिए स्नातक का अतिरिक्त प्रतिबंध लागू करना भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 का भेदभावपूर्ण और उल्लंघन होगा क्योंकि यह एक वर्ग के भीतर एक वर्ग बनाता है। 25 प्रतिशत की योग्यता को उप-वर्गीकरण द्वारा पूर्वानुमेय नहीं किया जा सकता है। यह समानता और समान अवसर की गारंटी का उल्लंघन करता है। वन रक्षकों ने, शैक्षणिक योग्यता की परवाह किए बिना, एल. डी. सी. ई. में भाग लेने के उद्देश्य से एक वर्ग का गठन किया है, एल. डी. सी. ई. में भाग लेने के लिए स्नातकों और गैर-स्नातकों के बीच एक और वर्गीकरण अनुचित है। यह समान लोगों के साथ असमान व्यवहार करने का मामला है। "

/

/

/

34. यू. पी. में राघवेंद्र आचार्य और अन्य बनाम कर्नाटक राज्य

& ओआरएस., 14 कर्नाटक राज्य द्वारा जारी एक अधिसूचना, जिसमें उन शिक्षकों के वेतन के संशोधित पैमाने को अस्वीकार कर दिया गया था जो 01.01.1996 से 31.03.1998 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त हुए थे। उच्च न्यायालय ने कहा कि आक्षेपित अधिसूचनाएं मनमाना थीं क्योंकि इनके परिणामस्वरूप सरकारी कॉलेजों में काम करने वाले शिक्षकों और गैर-सरकारी कॉलेजों में

काम करने वाले शिक्षकों के बीच भेदभाव होता है, जिसका अर्थ होगा समान लोगों के साथ असमान व्यवहार करना। यह भी राय दी गई कि, किसी भी स्थिति में, सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेजों के शिक्षकों के साथ-साथ क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेजों के शिक्षकों ने भी अपने दम पर एक वर्ग का गठन किया और उन कर्मचारियों के बीच कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता था जो 31.03.1998 से पहले सेवानिवृत्त हुए थे और जो उसके बाद सेवानिवृत्त हुए थे। इस न्यायालय ने माना कि सेवानिवृत्ति की तारीख के आधार पर लाया गया भेदभाव निंदनीय था:

/

/

/

“राज्य अपने कर्मचारियों को पेंशन लाभों के अनुदान के भुगतान के लिए नई योजना को लागू करते समय, उन सेवानिवृत्त कर्मचारियों के एक वर्ग को इससे वंचित कर सकता है जो शासित थे।

14 [2006] 2 पूरक।एससीआर 582; (2006) 9 एससीसी 630 ए

/

1191

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

नियमों के एक अलग समूह द्वारा। यदि विधि में इसकी अनुमति है तो कर्मचारियों के एक वर्ग को भी लाभों के विस्तार से वंचित किया जा सकता है। हालाँकि, अपीलार्थियों का मामला बिल्कुल अलग है। वे वेतन के संशोधित मानकों का लाभ उठा रहे थे। केंद्र सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा कर्नाटक राज्य को वेतन संशोधन समिति के लाभ उनके पक्ष में बढ़ाने की सिफारिश की गई है। उनके मामले में वेतन को 1986 में संशोधित किया गया था जबकि कर्नाटक राज्य के कर्मचारियों के वेतन को 1993 में संशोधित किया गया था। वेतन संशोधन समिति डब्ल्यू. ई. एफ. 1.1.1996 की सिफारिशों के लाभों से अपीलार्थियों को वंचित नहीं किया जा सकता था।

/

/

कर्नाटक राज्य का यह रुख कि अपीलकर्ता डब्ल्यू. ई. एफ. <आई. डी. 2 को इस आधार पर पेंशन लाभ प्रदान किए गए थे कि उसके अपने कर्मचारियों को वेतनमान के संशोधन का लाभ 1.1.1998 से प्रदान किया गया था, हमारी राय में, पूरी तरह से गलत है। पहला, क्योंकि

कर्नाटक राज्य के कर्मचारी और अपीलार्थी, संशोधित वेतनमान का लाभ देने के मामले में, उसी आधार पर नहीं खड़े हैं क्योंकि उनके मामलों में संशोधित वेतनमान एक अलग तारीख से लागू किए गए थे। दूसरा, अपीलार्थियों को वेतन डब्ल्यू. ई. एफ. 1.1.1996 के संशोधित मानकों का लाभ दिया गया था। अब यह अच्छी तरह से तय हो गया है कि राज्य द्वारा पूर्वव्यापी प्रभाव से वेतन संशोधन समिति की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए एक अधिसूचना जारी की जा सकती है क्योंकि यह कर्मचारियों के लिए फायदेमंद थी। एक बार वेतन संशोधन समिति की सिफारिशों को इस तरह का पूर्वव्यापी प्रभाव दिए जाने के बाद, संबंधित कर्मचारियों को उक्त तिथियों और/या अधिसूचना जारी करने की तारीख के बीच सेवानिवृत्ति की आयु तक पहुंचने के बावजूद यह माना जाएगा कि वे 1.1.1996 पर वेतन के उक्त पैमाने प्राप्त कर रहे हैं। इस तरह की अधिसूचना के कारण कि अपीलार्थी एक निहित अधिकार से प्राप्त हुए थे, उन्हें उससे वंचित नहीं किया जा सकता था और वह भी कार्यकारी निर्देशों के कारण।

/

/

/

/

राज्य का यह तर्क कि वेतनमान में संशोधन के साथ-साथ पेंशन लाभ प्रदान करने से संबंधित मामला अलग-अलग आधार पर है, इसलिए इसे खारिज किया जाना चाहिए। "

/

1192 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

35. अखिल मणिपुर पेंशनभोगी संघ में इसके सचिव बनाम.

मणिपुर राज्य और अन्य। 15 वह वर्गीकरण जिसके द्वारा पेंशन का वह सूत्र, जिसके द्वारा आई. डी. 1 से पहले सेवानिवृत्त होने वालों को बाद में सेवानिवृत्त होने वालों (जिन्हें संशोधन की उच्च दर दी गई थी) की तुलना में संशोधित पेंशन की कम दर दी गई थी, भेदभावपूर्ण माना गया था:

“संक्षेप अंतर्गत वर्तमान अपील की ओर ले जाने वाले तथ्य इस प्रकार हैं: मणिपुर राज्य ने समय-समय पर संशोधित केंद्रीय सिविल सेवा (पेंशन) नियम, 1972 को अपनाया। केंद्रीय सिविल सेवा नियम, 1972 के नियम 49 के अनुसार, कम से कम 30 साल की योग्यता सेवा पूरी करने के बाद नियमों के प्रावधानों के अनुसार सेवानिवृत्त होने वाले सरकारी कर्मचारी के मामले में, पेंशन की राशि की गणना औसत परिलब्धियों के 50 प्रतिशत पर की जाएगी, जो अधिकतम 4500 रुपये प्रति माह होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन यापन की लागत में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए, मणिपुर सरकार ने पेंशन की मात्रा के साथ-साथ कर्मचारियों के वेतन को बढ़ाने का निर्णय लिया। कि मणिपुर सरकार ने पेंशन की मात्रा को संशोधित करते हुए 21-4-

1999 दिनांकित एक कार्यालय ज्ञापन जारी किया। हालाँकि, बशर्ते कि वे मणिपुर सरकार के कर्मचारी जो 1-1-1996 पर या उसके बाद सेवानिवृत्त हुए हैं, वे अधिक प्रतिशत पर संशोधित पेंशन के हकदार होंगे और जो 1-1-1996 से पहले सेवानिवृत्त हुए हैं, वे कम प्रतिशत पर हकदार होंगे।

/

/

/

/

***** गुण-दोष के आधार पर भी हमारी दृढ़ राय है कि संशोधित पेंशन देने के उद्देश्य से दो वर्ग बनाने का कोई वैध औचित्य नहीं है-एक जो 1996 से पहले सेवानिवृत्त हुए और दूसरा जो 1996 के बाद सेवानिवृत्त हुए। हमारे विचार में, इस तरह के वर्गीकरण का संशोधित पेंशन का लाभ देने के उद्देश्य और उद्देश्य के साथ कोई संबंध नहीं है। सभी पेंशनभोगी एक वर्ग के होते हैं जो पेंशन नियमों के अनुसार पेंशन के हकदार होते हैं। भारत के संविधान का अनुच्छेद 14 विधि के समक्ष सभी को समानता और विधि ों की समान सुरक्षा सुनिश्चित करता है। इस मोड़ पर वैध वर्गीकरण की अवधारणा की जांच करना भी आवश्यक है। एक वैध वर्गीकरण वास्तव में एक वैध भेदभाव है। यह सच है कि भारत के संविधान का अनुच्छेद 16 एक वैध वर्गीकरण की अनुमति देता है। हालांकि, एक वैध वर्गीकरण एक न्यायसंगत उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए। न्यायसंगत उद्देश्य द्वारा प्राप्त किया जाने वाला परिणाम दूसरों की तुलना में अंतर विचार/उपचार के लिए कुछ के चयन को पूर्वनिर्धारित करता है। एक वर्गीकरण मान्य होना चाहिए

/

/

15 [2019] 9 एससीआर 905; (2020) 14 एससीसी 625 ए

/

1193

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

अनिवार्य रूप से दो परीक्षणों को पूरा करना होगा। सबसे पहले, विभेदक तर्क एक न्यायपूर्ण उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए और दूसरा, व्यक्तियों के एक समूह को दूसरे से अलग करने का विकल्प, प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के लिए एक उचित संबंध होना चाहिए। एक वैध

वर्गीकरण के लिए परीक्षण को एक बोधगम्य अंतर पर आधारित वर्गीकरण के आधार पर एक अंतर के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है, जिसका प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के साथ एक तर्कसंगत संबंध है। इसलिए, जब भी पेंशनभोगियों के एक समूह को दूसरों पर अनुकूल विचार के लिए वर्गीकृत करने के लिए एक कट-ऑफ तिथि (जैसा कि वर्तमान विवाद में है) तय की जाती है, तो वैध वर्गीकरण या वैध भेदभाव के लिए दोहरे परीक्षण को अनिवार्य रूप से संतुष्ट किया जाना चाहिए।

/

/

वर्तमान मामले में, प्रश्न वर्गीकरण का पेंशन को संशोधित करते समय प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के साथ कोई उचित संबंध नहीं है। जैसा कि ऊपर देखा गया है, पेंशन को संशोधित करने का उद्देश्य और उद्देश्य जीवन यापन की लागत में वृद्धि के कारण है। सभी पेंशनभोगी एक ही वर्ग का निर्माण करते हैं और इसलिए संशोधित पेंशन देने के उद्देश्य से इस तरह का वर्गीकरण अनुचित, मनमाना, भेदभावपूर्ण और भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है। राज्य मनमाने ढंग से समान रूप से स्थित व्यक्तियों में से लाभों, विशेष रूप से पेंशन लाभों के विस्तार के लिए एक कट-ऑफ तिथि नहीं चुन सकता है। किसी तर्कसंगत सिद्धांत पर आधारित एक वर्गीकरण होना चाहिए जब किसी भी लाभ के अनुदान के लिए समान रूप से स्थित वर्ग को अलग किया जाता है।

/

/

जैसा कि यहाँ ऊपर देखा गया है, और यहाँ तक कि यह भी विवाद में नहीं है कि राज्य सरकार द्वारा जीवन यापन की लागत में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए पेंशन में संशोधन करने का निर्णय लिया गया है। जीवन यापन की लागत में वृद्धि सभी पेंशनभोगियों को प्रभावित करेगी, चाहे वे 1996 से पहले या 1996 के बाद सेवानिवृत्त हुए हों। जैसा कि ऊपर देखा गया है, सभी पेंशनभोगी एक ही वर्ग के हैं। इसलिए, इस तरह के वर्गीकरण/कट-ऑफ तिथि द्वारा समकक्षों को असमान माना जाता है और इसलिए ऐसा वर्गीकरण जिसका पेंशन के संशोधन के उद्देश्य और उद्देश्य के साथ कोई संबंध नहीं है, अनुचित, भेदभावपूर्ण और मनमाना है और इसलिए उक्त वर्गीकरण को उच्च न्यायालय के विद्वान एकल न्यायाधीश द्वारा उचित रूप से अलग कर दिया गया था। इस स्तर पर, यह देखना आवश्यक है कि जब भी कोई नया लाभ दिया जाता है और/या नई योजना शुरू की जाती है, तो राज्य के लिए अपने वित्तीय संसाधनों को ध्यान में रखते हुए एक कट-ऑफ तिथि प्रदान करना संभव हो सकता है। लेकिन

/

/

/

वही व्यक्तियों के एक और एकल वर्ग के संबंध में लागू नहीं होगा, एक वर्ग के व्यक्तियों को दिया जाने वाला लाभ, जो पहले से ही अन्यथा लाभ प्राप्त कर रहे हैं और प्रश्न संशोधन के संबंध में है।

उपरोक्त और ऊपर बताए गए कारणों को ध्यान में रखते हुए, हमारी राय है कि वर्तमान अपील में विवाद/मुद्दा डी. एस. नकारा [डी. एस. नकारा बनाम भारत संघ, (1983) 1 एस. सी. सी. 305 में इस न्यायालय के निर्णय द्वारा पूरी तरह से कवर किया गया है। डी. एस. नकारा में इस न्यायालय का निर्णय मामले के तथ्यों पर पूरी ताकत से लागू होगा। उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने डी. एस. नकारा में इस न्यायालय के निर्णय का पालन नहीं करने में स्पष्ट रूप से गलती की है और विद्वान एकल न्यायाधीश के निर्णय और आदेश को उलटने में स्पष्ट रूप से गलती की है। डिवीजन बेंच द्वारा पारित आक्षेपित निर्णय और आदेश पोषणीय नहीं है और इसे रद्द किया जाना चाहिए और दरकिनार कर दिया जाना चाहिए और तदनुसार रद्द कर दिया जाता है और दरकिनार कर दिया जाता है। विद्वान एकल न्यायाधीश द्वारा पारित निर्णय और आदेश को एतद्द्वारा बहाल किया जाता है और यह अभिनिर्धारित किया जाता है कि सभी पेंशनभोगी, चाहे उनकी सेवानिवृत्ति की तारीख कुछ भी हो, अर्थात् 1996 से पहले के सेवानिवृत्त, उन पेंशनभोगियों के समान पेंशन में संशोधन के हकदार होंगे जो 1996 के बाद सेवानिवृत्त हुए थे। आज से तीन महीने की अवधि के भीतर संबंधित पेंशनभोगियों को बकाया राशि का भुगतान किया जाए। "

/

/

/

/

36. वर्तमान मामले में भी, इस बात से कोई इनकार नहीं है कि 29.03.2010 से पहले सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों ने वही कर्तव्यों का निर्वहन किया जो बाद में करने वालों के मामले में किया गया था। उन्हें सौंपी गई जिम्मेदारियों की गुणवत्ता और सामग्री समान थी। 01.01.2006 से पहले बकाया राशि नहीं देने के उत्तरदाताओं के निर्णय में गलती नहीं पाई जा सकती है; हालाँकि, उन लोगों को कोई संशोधन नहीं देना जो आदेश के समय सेवा में नहीं थे।

/

वेतन संशोधन को लागू करना जारी किया गया था और इसे उन लोगों तक सीमित कर दिया गया था,

रोजगार में स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण है। यह तर्क कि केवल मौजूदा कर्मचारियों को इस तरह का वेतन संशोधन देना उन्हें एमएसएफसी को देय एनपीए राशि की वसूली के लिए उत्साहित करने के लिए होगा, वेतन संशोधन द्वारा प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के साथ कोई तर्कसंगत संबंध नहीं है, जो कर्मचारियों को लाभान्वित करने और उन्हें जीवन यापन की लागत में वृद्धि से बचाने के लिए है।

/

37. वर्तमान मामले में, इसलिए, उपरोक्त निर्णयों में अनुपात को लागू करते हुए, यह स्पष्ट है कि उन लोगों के बीच कोई अंतर नहीं है जो 29.03.2010 से पहले सेवानिवृत्त हुए (या सेवा में मृत्यु हो गई) और जो सेवा में बने रहे-और जिन्हें वेतन संशोधन दिया गया था। जिन लोगों ने 01.01.2006 से 29.03.2010 की अवधि के दौरान काम किया और जो उसके बाद भी जारी रहे, वे एक ही वर्ग में आते थे, और आगे कोई अंतर नहीं किया जा सकता था। तथ्य यह है कि ए

/

1195

महाराष्ट्र राज्य वित्तीय निगम। पूर्व कर्मचारी ए. एस. एस. ओ. सी. v. महाराष्ट्र राज्य [एस. रवींद्र भाट, जे.] ए.

एम. एस. एफ. सी. ने किसी भी अंतरिम राहत की वसूली नहीं की, या (5 वें वेतन आयोग की सिफारिशों के लिए) 18.09.1996 से 31.12.2005 के बीच वितरित तदर्थ राशि, यह भी पुष्टि करती है कि ये पूर्व कर्मचारी उसी वर्ग के थे जिन्हें वेतन संशोधन का लाभ मिला था। सेवानिवृत्त कर्मचारियों का बहिष्कार, जो अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख प्राप्त करने पर 01.01.2006 और 29.03.2010 के बीच सेवानिवृत्त हुए, भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है।

/

38. हालांकि, इस न्यायालय की राय में, जिन कर्मचारियों ने वीआरएस लाभ प्राप्त किए और इस अवधि के दौरान स्वेच्छा से एमएसएफसी की सेवा छोड़ दी, वे एक अलग आधार पर खड़े हैं। वे उन लोगों के साथ समानता का दावा नहीं कर सकते हैं जिन्होंने लगातार काम किया, अपने कार्यों का निर्वहन किया और उसके बाद सेवानिवृत्त हुए। वी. आर. एस. कर्मचारियों ने निगम की सेवा को चुनने और छोड़ने का फैसला किया; उन्होंने पाया कि वी. आर. एस. प्रस्ताव उनके लिए फायदेमंद है। सामान्य अंतिम लाभों के अलावा, जो वे हकदार थे, उनमें से प्रत्येक को अतिरिक्त राशि दी गई थी- एक अनुग्रह राशि, जो सेवा के प्रत्येक पूर्ण वर्ष के लिए एक महीने के वेतन के बराबर थी। अन्य सेवानिवृत्त कर्मचारियों को कभी भी इतनी राशि नहीं दी गई। इस पर जोर दिया गया है।

/

ए. के. बिंदल बनाम भारत संघ (ऊपर): “स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना (वी. आर. एस.) जिसे कभी-कभी स्वैच्छिक पृथक्करण योजना (वी. एस. एस.) कहा जाता है, कंपनियों और औद्योगिक

प्रतिष्ठानों द्वारा अधिशेष कर्मचारियों को कम करने और वित्तीय दक्षता लाने के लिए शुरू की जाती है। भारत सरकार द्वारा जारी दिनांक 5-5-2000 के कार्यालय ज्ञापन में प्रावधान किया गया है कि बीमार और अव्यवहारिक इकाइयों के लिए, भारी उद्योग विभाग के वी. आर. एस. पैकेज को अपनाया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत एक कर्मचारी सेवा के प्रत्येक पूर्ण वर्ष के लिए 45 दिनों के परिलब्धियों (वेतन + डीए) के बराबर अनुग्रह भुगतान का हकदार है या सेवानिवृत्ति के समय मासिक परिलब्धियों को सेवानिवृत्ति की सामान्य तिथि से पहले बचे सेवा के शेष महीनों से गुणा किया जाता है, जो भी कम हो। यह अंतिम लाभों के अतिरिक्त है। सरकार इस तथ्य के बारे में सचेत थी कि कुछ सार्वजनिक उपक्रमों के वेतनमान को आई. डी. 1 से संशोधित नहीं किया गया था और इसलिए उसने दूसरे वी. आर. एस. में उस संबंध में पर्याप्त मुआवजा प्रदान किया है जिसकी घोषणा सभी केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए आई. डी. 2 पर की गई थी। योजना का खंड (ए) निम्नानुसार है:

/

/

/

/

(क) 1-1-1987 और 1-1-1992 स्तरों पर वेतनमान पर कर्मचारियों के संबंध में अनुग्रह भुगतान, जो मौजूदा योजना के अनुसार उनके मौजूदा वेतनमान पर गणना की जाती है, में क्रमशः 100% और 50 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी।

/

1196 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 1 एस. सी. आर.

इससे पता चलता है कि किसी कर्मचारी को योजना के अंतर्गत स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का विकल्प चुनने और उसके विकल्प को स्वीकार करने की स्थिति में अंतिम लाभों के अलावा काफी राशि का भुगतान किया जाना है। राशि का भुगतान कोई काम करने या कोई सेवा देने के लिए नहीं किया जाता है। इसका भुगतान कर्मचारी द्वारा स्वयं कंपनी या औद्योगिक प्रतिष्ठान की सेवाओं को छोड़ने और उसी में अपने सभी दावों या अधिकारों को छोड़ने के बदले में किया जाता है। यह देने और लेने का एक पैकेज सौदा है। यही कारण है कि व्यापार जगत में इसे "गोल्डन हैंडशेक" के रूप में जाना जाता है। इस राशि का भुगतान करने का मुख्य उद्देश्य नियोक्ता और कर्मचारी के बीच न्यायिक संबंध को पूरी तरह से समाप्त करना है। जब राशि का भुगतान कर दिया जाता है और कर्मचारी कंपनी या उपक्रम के अंतर्गत काम करना बंद कर देता है, तो वह अपने सभी अधिकारों के साथ चला जाता है और अपने पूर्व नियोक्ता के साथ अपने पिछले अधिकारों के लिए फिर से आंदोलन करने का कोई प्रश्न ही नहीं है, जिसमें पहले की अवधि के लिए वेतनमान में वृद्धि के संबंध में कोई दावा करना भी शामिल है। यदि कर्मचारी को

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना का विकल्प चुनने और उसे दी गई राशि को स्वीकार करने के बाद भी पूर्वव्यापी तिथि से वेतनमान में वृद्धि के संबंध में शिकायत करने की अनुमति दी जाती है, तो योजना शुरू करने का पूरा उद्देश्य पूरी तरह से विफल हो जाएगा। "

/

/

/

39. उपरोक्त कारणों से, यह माना जाता है कि वी. आर. एस. कर्मचारी अन्य लोगों के साथ समानता का दावा नहीं कर सकते हैं जो सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त करने पर सेवानिवृत्त हुए हैं। इसी तरह, जिन लोगों ने बर्खास्तगी या बर्खास्तगी आदि के कारण नौकरी छोड़ दी है, वे वेतन संशोधन के लाभ के हकदार नहीं होंगे।

/

40. उपरोक्त निष्कर्षों को ध्यान में रखते हुए, आक्षेपित निर्णय और आदेश को दरकिनार कर दिया जाता है। तदनुसार अपील की अनुमति दी जाती है, इस हद तक कि जो लोग 01.01.2006 से 29.03.2010 के बीच MSFC की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए, और उन लोगों के कानूनी उत्तराधिकारी/प्रतिनिधि जिनकी उस अवधि के दौरान मृत्यु हो गई, वे निगम द्वारा अनुज्ञात किए गए वेतन संशोधन के आधार पर बकाया के हकदार होंगे। निगम को निर्देश दिया जाता है कि वह इस निर्णय की तारीख तक 01.04.2010 से इन बकाया पर 8 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज का भुगतान करे। इन राशियों की गणना की जाएगी और आज से आठ सप्ताह के भीतर उन व्यक्तियों को वितरित कर दी जाएगी। उपरोक्त शर्तों में अपील की आंशिक रूप से अनुज्ञात है। लागत पर कोई आदेश नहीं होगा।

/

/

निधि जैन

अपील की आंशिक रूप से अनुज्ञात है।

/